उद्दात्त, मजबूत और यथार्थ स्त्री-छवि को उकेरती गालो लोक कथाएँ

तुम्बम रीबा 'लिली'

लोक साहित्य में लोकप्रियता की श्रेणी में लोक गीतों के बाद लोक कथाएँ आती हैं। लोक कथाओं का हमारे जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में कथा साहित्य की परंपरा अत्यंत ही पुरानी है। मनुष्य के जन्म के साथ ही लोक कथा का जन्म माना गया है। भारत में कथा-वाचन की परंपरा सदियों से चली आ रही है। लोक कथा की परंपरा न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध है। विदेशों में बच्चे इसे 'बेड टाइम स्टोरी' के रूप में सुनते आए हैं। 'लोक में प्रचलित और परंपरा से चली आने वाली मूलत: मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ ही लोक कहानियाँ कहलाती हैं'। हमारे देश में लोक कथाओं की परंपरा अत्यंत ही पुरानी है, यह प्राचीन काल से चली आ रही है। यहाँ वेदों में यह आख्यान के रूप में कथाओं के बीज पाए जाते हैं। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के शब्दों में, "लोक-कथाओं की परंपरा अत्यंत उद्गम दिखाई पड़ती है। ऋग्वेद में बहुत से ऐसे सूक्त होते हैं जिनमें दो या तीन पात्रों में कथोपकथन पाया जाता है। इन सूक्तों को संवाद सूक्त कहते हैं। ऋग्वेद में ऋषि शुन:शेप का प्रसिद्ध आख्यान उपलब्ध होता है। अपाला अत्रेयी के आदर्श नारी चरित्र हमें सर्वप्रथम इसी वेद में देखने को मिलता है। च्यवन भार्गव और सुकन्या मानवी की कथा भी बड़ी सुंदर रीति से इसमें वर्णित हैं।"

लोक कथाएँ हर संस्कृति में विद्यमान होती हैं। ऐसी कहानियाँ जो विशेष समूह के लोगों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी सुनते-सुनाते आए हैं। यानी कि पूरखों/पूर्वजों द्वारा अपनी नवीन पीढ़ी तक हस्तांतरित हो चले आए हैं। कुछ लोग इसे पूरखा कथा भी कहते हैं। ऐसी कथाएँ आमतौर पर मौखिक ही होती हैं, पर आजकल यह पुस्तकों के रूप में उपलब्ध होने लगी हैं। कथा सुनने की प्रवृत्ति लोगों में बचपन से ही होती है और बच्चे अपने बुजुर्गों से सुनने के लिए लालायित रहते हैं। इससे अच्छी बात यह होती है कि बच्चे अपने बुजुर्गों से जुड़े हुए रहते हैं और दादी-नानी, माता-पिता से इन्हीं कथाओं के माध्यम से रोचक तरीके से नीति एवं आदर्श आदि की शिक्षा पाते रहते हैं। आरंभ में लोक कथाएँ मौखिक रूप में थी पर बाद में यह लिखित रूप में आनी शुरू हो गई। लोक कथा को अंग्रेज़ी में फोकलोर (Folklore) कहते हैं उसका अर्थ होता है, किसी मानव-समूह की उस साझी अभिव्यक्ति जो कथाओं, कहावतों, चुटकुलों आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त होता है। इसके अलावा लोक वार्ता में उस मानव-समूह की लोककला, लोक वस्तु, लोकगीत, लोक-उत्सव आदि सब कुछ आ जाते हैं। डॉ. सत्येंद्र के अनुसार, "लोक में प्रचलित और परंपरा से चली आने वाली मूलत: मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ ही लोक कहानियाँ कहलाती हैं।" डॉ. धर्मराज सिंह के अनुसार, "जनजातियों की भूमि अरुणाचल प्रदेश में हजारों लोक कथाएँ मौखिक परंपरा में उपलब्ध हैं। इन कथाओं में जीवन के सभी पहलुओं का चित्रण होता है। रोचकता इन कथाओं का प्रमुख गुण है। अधिकांशत: इन कथाओं में वन एवं वन्य प्राणियों से संबंधित कथाओं के अतिरिक्त परियों से संबंधित कथाओं की भरमार है। भूत-प्रेत, अलौकिक पत्थर और वृक्ष, नदी, वर्षा, जंगली जानवर, धूर्त मनुष्य, अलौकिक शक्ति संपन्न मानव इत्यादि से संबंधित कथाएँ रोचक होने के साथ ही ज्ञानवर्धक भी होती हैं।"

गालो लोक कथाओं में इंसान और पशुओं में मैत्री भावना दिखलाया गया है, वे एक-दूसरे की भाषा समझ और बोल सकते हैं। आबोतानी और बंदरों की लोक कथा में वे एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए दिखाई देते हैं। इन कथाओं में यह भी बताया गया है कि आबोतानी का संबंध न सिर्फ पशुओं से था बल्कि उनका पक्षियों से भी रिश्ता था। यही नहीं उन्होंने 'पेजक' नामक पक्षी से विवाह भी किया था, इस विवाह के टूट जाने पर उन्होंने मेंढक (तातिक, सूखी पत्ती, कोसुक, अग्नि, ओञोर (काँटेदार पत्तों वाली पेड़) आदि से एक-एक कर विवाह किया था। अर्थात्, गालो लोक कथाओं में इंसान, जीव-जंतुओं और पेड़-पोधों में कोई भेदभाव नहीं होता था; सभी जीव-जंतु आपस में मिल जुलकर साथ रहते थे। गालो लोक कथाओं में चुड़ैल, भूत–प्रेत आदि की कथाएँ भी उपलब्ध हैं। ऐसी कथाएँ केवल मनोरंजन की दृष्टि से ही रची गई थी। काची-मिरी, ञिकाम पिर्बो, तित्ति मिरी आदि लोक कथाएँ इस श्रेणी में आती हैं। ये लोक कथाएँ अत्यंत ही रोचक है और इनमें कौतुकता है। गालो लोक कथाओं की यह विशेषता होती है, इनमें धर्म, जात-पात, लिंग आदि के आधार पर किसी भी तरह की कोई भेदभाव नहीं होता है। लोक कथाओं में आबोतानी का सभी जीव-जंतुओं के साथ मैत्री संबंध दिखाया गया है साथ ही लोक कथाओं के स्त्री पात्रों को अत्यंत ही सहृदया, मंगलकारी, ममतामयी और समदर्शी रूप में चित्रित किया गया है। हरीश कुमार शर्मा के अनुसार, "लोक कथाएँ हमारे भीतर रोमांच भरती हैं, साहसिकता जगाती हैं, हमें हमारे जीवन मूल्यों से जोड़ती हैं, जीवन–दर्शन सीखाती हैं। अतीत की हमारी असफलताओं के कारणों की पड़ताल करती हैं और हमारे द्वारा प्राप्त की गई सफलताओं की युक्तियाँ बतलाती हैं। इन लोक कथाओं में रहस्य–रोमांच है, अलौकिकता है, जादू-टोने हैं, दैवीय एवं आसुरी शक्तियाँ, प्राकृतिक आपदाएँ हैं और उन सबसे जूझते हुए आदमी का साहसिक व दुस्साहसिक संघर्ष है। उसकी विजय की महान गाथाएँ हैं। अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाएँ इन सब विशेषताओं से युक्त हैं।

गालो समाज के विद्वान श्रीमान मोर्गअ अतअ के अनुसार, "गालो जनजातीय समाज में पारंपरिक, विधि-विधानों, मान्यताओं और संस्कृति की एक बहुत ही सुदीर्घ परंपरा है और यह सब पीढ़ी–दर–पीढ़ी लोक कथाओं के द्वारा ही प्रसारित होती आई है। इनमें से कुछ में सत्य है और तथ्यों पर आधारित होती हैं, कुछ-कुछ कल्पित कथाओं पर आधारित हैं। इन लोक कथाओं का कोई लिखित दस्तावेज़ नहीं है अत: ये लोगों की जुबानी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी होती हुई आई हैं जो इस प्रक्रिया में कुछ-कुछ खो गई हैं तो कुछ लोगों के जेहन में रह गई हैं।"

पश्चिम सियांग जिले वर्तमान लेपारादा के पागी ग्राम के हेड गाम श्रीमान ञादो रीबा के अनुसार- "कोरुम ताने ओक्के आने आबो, ञिन-हागे, ञिक–ञिकोक गादग आगोम मेंनाम रिनाम गाद्देम दोयी-लुमा, नितोम–दोयी ब मेंदो कुक्का। जिमी आनअग ञि मिपू गअ नेन्को एम, हिची गे मेदो ग नेंकोम, आबो–तानी गअ लोक्के न्गुन्नम बअलेन कोम नारु अम रिलेन–मेनलेन नम्मेम दोयी– नितोम एम्दो कुन्ना।" अर्थात्, प्राचीन काल के किस्से-कहानियाँ जिसे बड़े–बुजुर्ग, विद्वान और ज्ञानी लोगों के द्वारा हम लोग सुनते आए हैं, वही लोक कथा है। इन लोक कथाओं में जिमी आनअ से मिपू का जन्म, हिची/पृथ्वी और आसमान के जन्म की कथा, आबो तानी से लेकर जीव–जगत के सभी प्राणियों के जन्म की कथाओं को ही नितोम दोयी अर्थात् लोक कथा कहते हैं। गालो में कल्पित लोक कथाओं की अक्षय निधि है। इन लोक थाओं का महत्त्व तब तक है जब तक ये गालो

जनजातीय लोगों के जन-जीवन से संबंधित हैं। पर वक़्त की रफ्तार के साथ-साथ पीढ़ी दर पीढ़ी इन लोक कथाओं का महत्त्व और इनके स्वरूप में परिवर्तन के आसार नज़र आने लगे हैं।

यह सत्य है कि परिवर्तन समय की मांग होती हैं, वक़्त बहुत बड़ी शक्ति होती है, इसमें हर चीज़ को बदलने की ताक़त होती हैं। गालो लोक कथाओं में भी समय–समय पर परिवर्तन होती आई है इसलिए कई बार एक ही लोक कथा को लोग भिन्न–भिन्न तरीके से सुनाते हैं। लोक कथाओं में विभिन्न प्रकार के विषय समाहित होते हैं, पर इसका मुख्य उद्देश्य होता है श्रोता को नैतिक शिक्षा प्रदान करना। विभिन्न लोक कथाओं में नैतिकता की विभिन्न कहानियाँ जुड़ी हुई होती हैं, जो आगे चलकर बच्चों को सही-गलत की शिक्षा देकर उनका मार्गदर्शन करती हैं। अत: इसका बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में बहुत ही अहम महत्त्व होता है। गालो जनजाति में जब भी कोई बच्चा कुछ गलत आचरण करता है तो लोग कहते हैं– 'आनअ आबो दोयी मोमा पानाम गारिबअ रिला, आनअ आबो दोयी-लुमा तामाना ओमेअ ञी रिमा दो', अर्थात् 'माता–पिता ने जैसे उसे लोक कथा नहीं सुनाया हो.... माता-पिता एवं बुजुर्गों द्वारा कथा-कहानियाँ नहीं सुनने वाले बच्चे आगे चलकर अच्छे इंसान नहीं बनते'। अर्थात्, इंसान के व्यक्तित्व की रचना में इन कथाओं की बहुत ही अहम भूमिका होती है। लोक कथाओं से व्यवहार ज्ञान, लोक ज्ञान, समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, खान–पान, रीति-रिवाजों आदि की शिक्षा मिलती है।

इन्हीं कथनों से पता चल जाता है कि हमारे जनजातीय समाज में लोक कथाओं का कितना अधिक महत्त्व है। लोक कथाओं के द्वारा बुजुर्ग अपने नवीन पीढ़ियों में नीति एवं आदर्श की शिक्षा देते हैं। लोक कथाएँ बच्चों के बौद्धिक शक्ति और उनके व्यक्तित्व के विकास में काफी योगदान देती हैं।

गालो लोक कथाओं का वर्गीकरण:

गालो में बहुत सारी लोक कथाएँ हैं जो सदियों से पीढ़ी देर पीढ़ी मौखिक परंपरा में चली आ रही हैं। ये लोक कथाएँ गालो जनजातीय जीवन की लोक संस्कृति एवं परंपरा के परिचयात्मक इतिहास की द्योतक हैं। गालो लोक कथाओं पर गालो जनजाति के प्रमुख विद्वान श्रीमान मोर्गअ अतअ के अनुसार गालो लोक कथाओं के अनेक प्रकार होते हैं, इनमें से कई कथाएँ वीर पुरुषों पर आधारित होती हैं। इस प्रकार की लोक कथाओं में वीर पुरुषों की वीरता एवं शौर्यपूर्ण कार्यों का ही वर्णन अधिक होता है। इस प्रकार उन्होंने गालो लोक कथाओं के जो विभिन्न प्रकार बताए हैं उसे अध्ययन की सुविधा हेतु इस शोध पत्र में उसके विषयानुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित किया है।

(क) उत्पत्तिमूलक लोक कथाएँ

(ख) उपदेशात्मक लोक कथाएँ

(ग) प्रेममूलक लोक कथाएँ

(घ) मनोरंजनपरक लोक कथाएँ

(ङ) भूत-प्रेत की लोक कथाएँ

गालो लोक कथाओं में संप्राप्य स्त्री-विषयक सामाजिक दृष्टि-

गालो में स्त्री से संबंधित विभिन्न विषयों पर लोक कथाओं का बहुत ही समृद्ध भण्डार है। इन लोक कथाओं में प्रमुख विषय हैं- सृष्टि के विकास की लोक कथा, धरती पर इंसान और सभी जीव-जंतुओं की उत्पत्ति पर लोक कथा, मनुष्य के विस्थापन की कथा, आदिम मानव आबोतानी के विवाह की कथाएँ, उपदेशात्मक लोक कथाएँ आदि। इनमें से कई लोक कथाएँ स्त्री विषयक हैं, जिनमें स्त्रियाँ ही मुख्य पात्र की भूमिका निभाती हैं। इन लोक कथाओं में स्त्री पात्रों के लौकिक एवं अलौकिक दोनों रूपों का वर्णन उपलब्ध है। गालो लोक कथाओं में परी-कथाओं का अभाव है, वह शायद इसीलिए है कि गालो लोक कथाएँ वास्तविकता के धरातल पर बुनी गई जिसमें स्त्रियों की छवि वास्तविक रूप में रेखांकित हुए हैं। इन लोक कथाओं में रोचकता, नीति एवं आदर्श की शिक्षा एवं मनोरंजन के साथ गालो जनजातीय जीवन के प्राचीनकाल के इतिहास और उससे संबंधित स्त्री-जीवन से जुड़ी कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ भी समाहित हैं। इन लोक कथाओं में गालो जनजातीय जीवन में स्त्री के महत्त्व, सृष्टि की उत्पत्ति में जिमी आनअ के रूप में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका, मनुष्य के धरती पर कृषि-कार्य के प्रारंभ में मोपीन आनअ के रूप में स्त्री की भूमिका, स्त्री के अदम्य साहस एवं वीरता, बहन के प्रति बहन का असीम प्रेम, माता, पत्नी, बहन आदि के रूपों में पुरुष की मार्गदर्शिका बनी स्त्री के रूपों एवं आयामों का वर्णन उपलब्ध हैं।

आधारित कई आस्थाओं एवं मान्यताओं पर आज भी गालो लोगों का विश्वास है। आज भी लोग जिमी आनअ को माता स्वरूप मानते हैं, मोपीन आनअ की आराधना करते हुए प्रत्येक वर्ष पाँच से सात अप्रैल तक मोपीन त्योहार मानते हैं, दियी तामी को लक्ष्मी देवी का अवतार मानकर अपने नासू (धान रखने के गोदाम) में उनकी याद में अनाज रखते हैं, सूर्य को माता मानकर अपने जीवन का साक्षी मानते हैं, क्योंकि उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं है यह मानकर कोई भी पाप-अपराध आदि करने से डरते हैं। यहाँ तक कि इन्हीं लोक कथाओं पर आधारित और इनसे जन्मी लोक आस्थाओं एवं मान्यताओं पर गालो समाज की आचार-संहिता एवं दंड-संहिता आधारित होती है। गालो लोक कथाओं की स्त्रियों की छवि अत्यंत ही उद्दात्त, मजबूत और यथार्थ के धरातल एवं वास्तविकता से मेल खाती हुई है, जो परी कथाओं जैसी भ्रामक और राजसी व सजावटी ठाठ–बाठ और शानो शौकत से कोसों दूर है।

गालो लोक गाथाओं के तहत विभिन्न लोक गाथाओं पर विचार प्रस्तुत किया गया है, जिसके तहत यह पाया गया है कि गालो लोक गाथाओं में मनोरंजन, रोचकता, आनंद आदि प्रदान करने के साथ–साथ इसमें नीति और उपदेश का भी समावेश है। इसके पठन से कई बार ऐसा लगता है कि मनोरंजन के बहाने इनमें नैतिकता का संदेश ही अधिक दिया गया हो। इन लोक गाथाओं में गालो जनजातीय समाज के स्त्री–जीवन के तमाम पहलुओं का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इनके हर लोक गाथाओं से जुड़े गीतों पर स्त्रियाँ नृत्य करती हैं। नृत्य न केवल लोगों के तन और मन में स्फूर्ति जगाता है बल्कि यह आपसी एकता, सद्भावना और आपसी-सौहार्द्र का भी परिचायक है।

लोक गाथाओं में वर्णित समाज और उससे जुड़ी संस्कृति में स्त्री का जो स्थान है वह अत्यंत ही गौरवपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण है। हरेक लोकगाथा में समाज में स्त्री के अत्यंत ही अहम भूमिकाओं का चित्रण है। जिमी आनअ, मोपिन देवी, आञी पिंकू–पिंतअ, दियी तामी आदि का अलौकिक रूप अत्यंत ही गौरवपूर्ण है, साथ ही साथ

अन्य लौकिक पात्र जैसे तोपो गोनअ, आञि कारपू–कारलू, आञि कोयो-कोयी, लूब राय की बड़ी बहन अञि राय आदि पात्र भी किसी से कम नहीं हैं। वे सभी अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने घर-परिवार और समाज के उत्थान में अपना योगदान देती हैं। ञिर्मेन आलो लोकगाथा में धूर्त तापेन के बहकावे में आकर अपनी ज़िंदगी बर्बाद करने वाली बहन दीडूम भी एक अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण पात्र है जो युवतियों को जीवन का बहुत ही अहम पाठ पढ़ाती है। वास्तव में गालो लोक गाथाओं की दुनिया साहित्यिक दृष्टियों से बहुत ही समृद्ध और महत्त्वपूर्ण है। इनमें स्त्रियाँ कभी अलौकिक रूप में होती हैं, जिनके पास पूरे ब्रह्मांड को रचने की शक्ति होती है, तमाम जीव-जंतुओं को पैदा करने की ताकत होती है। विश्व–जननी के रूप में चमत्कार करती हैं आदि। इस प्रकार वे आदिम मानव आबोतानी का मार्गदर्शन भी करती हैं, उन्हें कृषि-कार्य सिखाकर पारिवारिक ज़िंदगी जीने की प्रेरणा देती हैं। गालो लोक गाथाओं में स्त्री के विविध रूपों का चित्रण किया गया है जो विभिन्न भूमिकाएँ निभाती हैं। अपनी हर रूप में स्त्री पुरुषों की सहचरी बनकर उनकी प्रेरणा बनकर उनका सही मार्गदर्शन करती हुई उन्हें सदा उन्नति और प्रगति की ओर अग्रसर करती हैं।

इन लोक गाथाओं में वर्णित आम स्त्रियाँ उपेक्षिता, शोषित, असहाय, अबला, पददलित बिल्कुल भी नहीं होती वे साधारण स्त्रियाँ होते हुई भी अत्यंत ही सच्चरित्र, सुशील और मजबूत होती हैं। इन लोक गाथाओं में मनुष्य के जीवन में स्त्री की महत्ता को प्रतिपादित किया है। संकलित लोक गाथाओं में कल्पना की प्रचुरता है, पर यही साहित्य समाज का इतिहास है भले ही इसकी प्रामाणिकता संदिग्ध हो पर कल्पना यथार्थ की ही भूमि पर पनपती हैं और वहीं से उड़ान भरती है। लोक साहित्य में लोक कथा, लोक गाथा, लोकगीत आदि में बहुत कुछ तथ्य कल्पना के साथ घुल मिलकर रचा गया होता है, जिससे मानव के इतिहास की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। गालो लोक कथाओं के अनुसार आबोतानी के जीवन में जितनी भी स्त्री पात्र आई, सभी गुणवती, सच्चरित्र, सुशील, मंगलकारी और आदर्श स्त्रियों की सर्वोत्तम मिसाल थी। वे आबोतानी के साथ थी पूरी तरह से समर्पित अर्धांगिनी बनकर उनकी सेवा करती रही मगर फिर भी आबोतानी नहीं सुधरे। उनकी पत्नियाँ आदर्श पत्नी की प्रतिमूर्ति बनकर सदा उनकी सेवा में जुटी रहती थी। मगर अपनी चंचल पुरुष वृत्ति के कारण आबोतानी का अपनी पत्नियों से बहुत जल्द जी भर जाता था। उन्होंने कई विवाह किए, वह एक के बाद एक करके जितनी जल्दी नई पत्नी ब्याह लाते उतनी ही जल्दी उन्हें त्याग भी देते थे। आबोतानी की पत्नियाँ उनके सभी दुर्व्यवहार सहती रही पर नारी सुलभ सौम्यता एवं कोमल भावनाओं के कारण उनसे प्रेम करती रही और सदा उनको उत्कर्ष के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती रही। धरती की तरह सहनशील और शांत ये स्त्रियाँ, आबोतानी से कभी नहीं लड़ी; अपनी गरिमा एवं गौरव को बनाए रखी।

उपर्युक्त विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि गालो लोक कथाओं में स्त्री के विविध रूपों एवं आयामों का वर्णन उपलब्ध है। इन लोक कथाओं में रोचकता, नीति एवं आदर्श की शिक्षा एवं मनोरंजन के साथ गालो जनजातीय जीवन की प्राचीनकाल के इतिहास और उससे संबंधित स्त्री-जीवन से जुड़ी कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ भी समाहित हैं। इन लोक कथाओं में गालो जनजातीय जीवन में स्त्री के महत्त्व, सृष्टि की उत्पत्ति में जिमी आनअ के रूप में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका, मनुष्य के धरती पर कृषि-कार्य के प्रारंभ में मोपीन आनअ के रूप में स्त्री की भूमिका, स्त्री के अदम्य साहस एवं वीरता, बहन के प्रति बहन का असीम प्रेम, माता, पत्नी, बहन आदि के रूप में पुरुष की मार्गदर्शिका बनी स्त्री के रूपों का वर्णन उपलब्ध है। इन लोक कथाओं में प्राप्त

लोक-आस्थाओं एवं मान्यताओं पर आज भी गालो लोगों का विश्वास है। आज भी लोग जिमी आनअ को माता स्वरूप मानते हैं, मोपीन आनअ की आराधना करते हुए प्रत्येक वर्ष पाँच से सात अप्रैल तक मोपीन त्योहार मनाया जाता है, दियी तामी को लक्ष्मी देवी का अवतार मानकर अपने नासू (धान रखने के गोदाम) में उनकी याद में अनाज रखती हैं, सूर्य को माता मानकर अपने जीवन का साक्षी मानते हैं, क्योंकि उस से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है यह मानकर कोई भी पाप-अपराध आदि करने से डरते हैं।

गालो लोक गाथाओं के तहत विभिन्न लोक गाथाओं पर विचार प्रस्तुत किया गया है, जिसके तहत यह पाया गया है कि गालो लोक गाथाओं में मनोरंजन, रोचकता, आनंद आदि प्रदान करने के साथ–साथ इसमें नीति और उपदेश का भी समावेश है। इसके पठन से कई बार ऐसा लगता है कि मनोरंजन के बहाने इनमें नैतिकता का संदेश ही अधिक दिया गया हो। इन लोक गाथाओं में गालो जनजातीय समाज के स्त्री–जीवन के तमाम पहलुओं का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इनके हर लोक गाथाओं से जुड़े गीतों में स्त्रियाँ नृत्य करती हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि सांस्कृतिक एवं पारंपरिक विरासत के निर्माण में अरुणाचल प्रदेश की गालो जनजातीय गालो लोक कथाओं में स्त्री की भूमिका अत्यंत ही अहम एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, दिल्ली.

सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, हिन्दी साहित्य मंदिर, राजस्थान, जोधपुर, संस्करण-2006

हरीश कुमार शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली

धर्मराज सिंह, अरुणाचल की गालो जनजाति और उसकी सामाजिक व्यवस्था, नई दिल्ली

ईली दोय, ए स्टडी ऑफ द गालो मिथ्स, नेशन प्रेस, नई दिल्ली

तेजूम पादू, गालो पोनू एण्ड मेम्मेन, विवेकानंद केंद्र इंस्टीट्यूट, गुवाहाटी

आर.एन कोली, बातम पर्टिन एण्ड एस.चन्दा– द एडिटोर्स, फोल्क सोंग्स ऑफ अरुणाचल प्रदेश वॉल्यूम डाइरेक्टोरेट ऑफ रिसर्च, अरुणाचल प्रदेश, 2018

*(**लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश की लोकप्रिय कथाकार डॉ. तुम्बम रीबा 'लिली' देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सह प्रोफेसर हैं। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं- 'कातम', 'उस रात की सुबह' आदि। मोबा: 9436635234, ई-मेल: lilyriba2006@gmail.com)*